CEDSI TIMES

Your Skilling Partner...

राजस्थान सरकार ने गांठदार त्वचा रोग से मृत गायों के मुआवजे के लिए ₹175 करोड़ आवंटित किए

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने वायरल बीमारी से प्रभावित गायों की मौत के लिए मुआवजे के रूप में ₹175 करोड़ जारी करके गांठदार त्वचा रोग की समस्या के समाधान में एक महत्वपूर्ण कदम की घोषणा की। प्रमुख कामधेनु पशुधन बीमा योजना के तहत, राज्य सरकार ने 41,000 से अधिक पशुपालकों के बैंक खातों में ₹40,000 हस्तांतरित किए, जिन्होंने अपने दुधारू पशुओं को बीमारी के कारण खो दिया था।

राजस्थान में गांठदार त्वचा रोग का गंभीर प्रकोप हुआ, जिसके परिणामस्वरूप 15.50 लाख से अधिक गोजातीय पशु संक्रमित हुए और दुखद मृत्यु का आंकड़ा 75,800 से अधिक हो गया। इस पहल के साथ, राजस्थान इस संक्रामक बीमारी के कारण विशेष रूप से गाय की हानि के लिए वित्तीय मुआवजा देने वाला देश का पहला राज्य बन गया है।

सीएम ने प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) भुगतान जारी करके प्रभावित पशुपालकों को समर्थन देने के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। यह आयोजन तीन दिवसीय राजस्थान किसान महोत्सव के उद्घाटन के साथ भी हुआ, जो किसानों और कृषि क्षेत्र में उनके योगदान का जश्न मनाने वाला त्योहार है।

केंद्र ने डेयरी उद्योग में क्रांति लाने के लिए "दुग्ध संकलन साथी मोबाइल ऐप" लॉन्च किया

केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री, महेंद्र नाथ पांडे ने भारतीय डेयरी उद्योग में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर चिह्नित करते हुए, अभिनव "दुग्ध संकलन साथी मोबाइल ऐप" का अनावरण किया। भारी उद्योग मंत्रालय के तहत "मिनी रत्न" केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम, राजस्थान इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड (आरईआईएल) द्वारा विकसित, यह मोबाइल ऐप दूध संग्रह प्रक्रिया में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करके एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए तैयार है।

भारी उद्योग मंत्रालय ने इस बात पर प्रकाश डाला कि "दुग्ध संकलन साथी मोबाइल ऐप" का प्राथमिक उद्देश्य दूध की गुणवत्ता को बढ़ाना, हितधारकों के बीच पारदर्शिता को बढ़ावा देना और दूध सहकारी समितियों सहित जमीनी स्तर के ग्राम स्तर पर संचालन को सुव्यवस्थित करना है। डिजिटल प्रौद्योगिकी की शक्ति का लाभ उठाकर, इस ऐप का लक्ष्य डेयरी क्षेत्र में क्रांति लाना है, जिससे दूध उत्पादकों को सीधे लाभार्थी हस्तांतरण की सुविधा मिल सके।

मसूरी में लॉन्च कार्यक्रम के दौरान, श्री पांडे ने इस अभूतपूर्व पहल के लिए अपना उत्साह व्यक्त किया और कहा कि ऐप दूध संग्रह प्रक्रिया में शामिल सभी हितधारकों के लिए पारदर्शिता और सशक्तिकरण लाएगा।

बिहार देशी नस्ल के पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी योजना शुरू करेगा

बिहार के पशुपालन विभाग ने देशी नस्ल के पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए एक सब्सिडी योजना का प्रस्ताव दिया है। इस योजना में गौशाला स्थापना, मवेशियों की खरीद और खेती प्रबंधन की लागत पर 75% तक की सब्सिडी की परिकल्पना की गई है। दो, चार, 15 और 20 गायों की इकाइयों में साहीवाल और थारपारकर नस्ल की गायों की खरीद पर सब्सिडी की पेशकश की जाएगी।

पशुपालन और मत्स्य पालन मंत्री मोहम्मद अफाक आलम ने कहा कि प्रस्ताव जल्द ही कैबिनेट की मंजूरी के लिए तैयार होगा। “लाभार्थियों के पास गौशाला के विकास के लिए कम से कम 5-10 कट्ठा जमीन होनी चाहिए। जैसा कि प्रस्तावित है, किसानों को योजना के तहत सब्सिडी अनुदान के लिए संबंधित जिला डेयरी विकास अधिकारियों को ऑनलाइन आवेदन जमा करना होगा, ”मंत्री ने कहा।

डेयरी विकास निदेशक, संजय कुमार ने कहा कि 15-20 मवेशियों को संभालने की योजना का लाभ उठाने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति को स्थापना लागत का 40% तक सब्सिडी की पेशकश की जाएगी।

एनडीडीबी के सहयोग से हिमाचल प्रदेश में दूध प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित किया जाएगा

डेयरी उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण विकास में, मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश सरकार ने कांगड़ा जिले के डगवार में एक अत्याधुनिक दूध प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने की योजना की घोषणा की है। 250 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली इस परियोजना को संचालन और विपणन में उनकी सहायता से राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के सहयोग से कार्यान्वित किया जाएगा।

डगवार संयंत्र की स्थापना से कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना और चंबा जिलों के डेयरी किसानों को महत्वपूर्ण लाभ होगा। दूध संग्रह को अनुकूलित करने और संचालन को सुव्यवस्थित करने के लिए, एनडीडीबी एक कुशल दूध संग्रह प्रणाली विकसित करने के लिए इन क्षेत्रों में एक सर्वेक्षण करेगा।

डगवार दूध प्रसंस्करण संयंत्र अत्याधुनिक तकनीक से लैस होगा और इसकी क्षमता एक लाख लीटर से तीन लाख लीटर तक होगी। दूध के प्रसंस्करण के अलावा, संयंत्र उच्च गुणवत्ता वाले दूध उत्पादों का भी उत्पादन करेगा, जो डेयरी क्षेत्र के भीतर मूल्य संवर्धन और विविधीकरण के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर देगा।

एनडीडीबी के साथ सहयोग और दूध प्रसंस्करण संयंत्र की स्थापना डेयरी क्षेत्र को बढ़ावा देने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और डेयरी किसानों को सशक्त बनाने के हिमाचल प्रदेश के प्रयासों का प्रतीक है। संयंत्र में आधुनिक बुनियादी ढांचा और अत्याधुनिक तकनीक दूध प्रसंस्करण क्षमताओं को बढ़ाएगी, जिससे उपभोक्ताओं के लिए उच्च गुणवत्ता वाले डेयरी उत्पादों का उत्पादन सुनिश्चित होगा।

महाराष्ट्र ने दूध में मिलावट से निपटने के लिए समितियां बनाईं

दूध में मिलावट के मुद्दे को संबोधित करने के लिए एक सक्रिय कदम में, पशुपालन और डेयरी विकास मंत्री, राधाकृष्ण विखे पाटिल ने घोषणा की कि समस्या से निपटने के लिए महाराष्ट्र के प्रत्येक जिले में समितियां स्थापित की जाएंगी। मंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि मिलावटी दूध खरीदने वाली डेयरियों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज किए जाएंगे। यह निर्णय पुणे में मंत्री और डेयरी प्रतिनिधियों के बीच एक बैठक के बाद आया, जहां उन्होंने मूल्य वृद्धि, उत्पादन और मिलावट के संबंध में चिंताओं पर चर्चा की।

दूध में मिलावट की गंभीरता पर प्रकाश डालते हुए, मंत्री विखे पाटिल ने स्वीकार किया कि खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) के भीतर सीमित जनशक्ति ने मिलावट के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई में बाधा उत्पन्न की है। मंत्री ने इस मुद्दे की गंभीरता पर जोर देते हुए कहा कि मिलावटी दूध खरीदने में शामिल डेयरी अधिकारियों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज किए जाएंगे। इस कड़ी कार्रवाई का उद्देश्य दुग्ध उत्पादों की गुणवत्ता और सुरक्षा से समझौता करने के लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराना है।

सरकारी अधिकारियों, कानून प्रवर्तन एजेंसियों और डेयरी प्रतिनिधियों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों से दूध में मिलावट के खिलाफ लड़ाई मजबूत होने की उम्मीद है। नियमित निरीक्षण, छापेमारी और उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करके, ये समितियां मिलावट प्रथाओं को रोकने और उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

मिलावटी दूध खरीदने में शामिल डेयरी अधिकारियों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज करने का कदम एक मजबूत संदेश देता है कि मिलावट बर्दाश्त नहीं की जाएगी। यह अनैतिक गतिविधियों में संलग्न डेयरियों के लिए एक निवारक के रूप में भी कार्य करता है, उन्हें गुणवत्ता नियंत्रण को प्राथमिकता देने और नियामक मानकों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

केरल ने पशुपालन और डेयरी विकास में आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए कोल्लम में पहले समन्वय केंद्र का उद्घाटन किया

पशुपालन और डेयरी विकास क्षेत्रों में आधुनिकीकरण की आवश्यकता को मान्यता देते हुए, पशुपालन और डेयरी विकास मंत्री जे. चिंचुरानी ने बदलते समय के साथ बने रहने के महत्व पर जोर दिया। मंत्री ने कडक्कल में सन्मार्गदायिनी स्मारक वयनशाला में केरल के पहले क्षेत्रीय पशुपालन उद्यमिता विकास प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन किया, जिसे समन्वयम केंद्र के नाम से जाना जाता है। यह केंद्र केरल पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (KVASU) द्वारा शुरू की गई आजीविका हस्तक्षेप सुविधा एन्क्लेव परियोजना का हिस्सा है।

मंत्री चिंचुरानी ने खुलासा किया कि सरकार वर्तमान में केरल के दक्षिणी क्षेत्र में एक पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय स्थापित करने के प्रस्ताव पर विचार कर रही है। उन्होंने दूध उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने की दिशा में राज्य की प्रगति की सराहना की और केरल में उत्पादित दूध की बेहतर गुणवत्ता को स्वीकार किया।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए, केवीएएसयू के कुलपति एमआर ससींद्रनाथ ने समन्वय केंद्र की स्थापना के महत्व पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में पशुपालन और डेयरी विकास निदेशक ए. कौशिकन, चदयामंगलम ब्लॉक पंचायत के अध्यक्ष लथिका विद्याधरन, इत्तिवा ग्राम पंचायत के अध्यक्ष सी. अमृता और एम.के. की उपस्थिति देखी गई। मुहम्मद असलम, समन्वयम परियोजना के कार्यान्वयन अधिकारी।

उद्घाटन के उपलक्ष्य में, पशुपालन और डेयरी क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों के लिए एक जागरूकता श्रृंखला आयोजित की गई थी। प्रोफेसर जस्टिन डेविड और एस.आर. केवीएएसयू के श्याम सूरज ने शैक्षिक सत्रों का नेतृत्व किया और प्रतिभागियों को बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और ज्ञान से समृद्ध किया।

एनडीआरआई के वैज्ञानिकों ने तेज़ हवा के वेग के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए एक मशीन विकसित की है

करनाल में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई) के वैज्ञानिकों ने डेयरी पशुधन पर उच्च हवा के वेग के प्रभावों का अध्ययन करने में सक्षम एक मशीन सफलतापूर्वक विकसित की है। यह नवोन्मेषी उपकरण डेयरी पशुओं की भलाई पर अत्यधिक मौसम और हवा की घटनाओं के कारण होने वाले जोखिम और प्रभाव के आकलन में योगदान देगा। नेशनल इनिशिएटिव ऑन क्लाइमेट रेजिलिएंट एग्रीकल्चर (एनआईसीआरए) परियोजना के हिस्से के रूप में विकसित की गई यह मशीन काफी ताकत के साथ 1 से 80 किमी प्रति घंटे की गति वाली हवा उत्पन्न करने की क्षमता रखती है।

एनडीआरआई के वैज्ञानिकों के अनुसार, मशीन का प्राथमिक उद्देश्य विभिन्न मौसमों के दौरान विभिन्न हवा की स्थिति के तहत पशुधन जानवरों में विभिन्न शारीरिक मापदंडों के अध्ययन को सक्षम करना है। जानवरों को अलग-अलग हवा की गति और वायु प्रवाह के अधीन करके, शोधकर्ता संबंधित प्रभावों का निरीक्षण और विश्लेषण कर सकते हैं। एनडीआरआई के निदेशक और कुलपति धीर सिंह ने इस परियोजना के प्रति अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, "यह मशीन विभिन्न हवा की गति और वायु स्थितियों, विशेष रूप से टाइफून और अन्य पर्यावरणीय प्रभावों के संबंध में पशुधन प्रतिक्रियाओं के आकलन की सुविधा प्रदान करेगी।"

इस नवीन प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से यह समझने में महत्वपूर्ण योगदान मिलने की उम्मीद है कि तेज़ हवा का वेग डेयरी पशुधन और उनके समग्र कल्याण को कैसे प्रभावित करता है। विभिन्न हवा की गति के संपर्क में आने वाले जानवरों की शारीरिक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करके, शोधकर्ता चरम मौसम की घटनाओं के प्रभावों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। यह ज्ञान किसानों, नीति निर्माताओं और शोधकर्ताओं को प्रतिकूल मौसम की स्थिति के दौरान डेयरी पशुओं के कल्याण की सुरक्षा के लिए उचित रणनीतियों और शमन उपायों को लागू करने में मदद करेगा।

सीईडीएसआई ब्लॉग

शीर्षक: चारा एवं चारा संकट का मुकाबला

पृष्ठभूमि:

भारत, अपनी विशाल आबादी और डेयरी उत्पादों की बढ़ती मांग के साथ, अपने पशुओं के लिए भोजन और चारे की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण चुनौती का सामना कर रहा है। चारे की उपलब्धता और गुणवत्ता सीधे तौर पर डेयरी पशुओं की उत्पादकता और स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती है। हालाँकि, सेंटर ऑफ़ एक्सेलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया (सीईडीएसआई) डेयरी और संबद्ध क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ाने और हितधारकों को प्रशिक्षण प्रदान करने की दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रहा है। सीईडीएसआई का लक्ष्य किसानों को व्यापक सलाहकार सेवाएं प्रदान करना, उन्हें टिकाऊ और कुशल डेयरी खेती प्रथाओं के लिए ज्ञान और कौशल के साथ सशक्त बनाना है।

भारत में वर्तमान चारा एवं चारा स्थिति:

भारत का पशुधन क्षेत्र देश की कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, आय सृजन और ग्रामीण आजीविका में महत्वपूर्ण योगदान देता है। हालाँकि, भोजन और चारे की अपर्याप्त उपलब्धता और खराब गुणवत्ता महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करती है। पशुपालक अक्सर अपने पशुओं की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संघर्ष करते हैं, जिससे दूध उत्पादन में कमी, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं और समग्र रूप से कम उत्पादकता होती है।

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के एक अध्ययन के अनुसार, भारत को लगभग 62% हरे चारे, 69% सूखे चारे और 36% सांद्रित चारे की कमी का सामना करना पड़ता है। यह कमी विशेष रूप से उत्तर भारत और मध्य भारत के कुछ हिस्सों जैसे कुछ क्षेत्रों में गंभीर है।

सीईडीएसआई की पहल और प्रभाव:

सीईडीएसआई डेयरी फार्मिंग में चारे और चारा की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानता है और मौजूदा चुनौतियों से निपटने के लिए विभिन्न पहल की है। अपने व्यापक प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों के माध्यम से, सीईडीएसआई का लक्ष्य संतुलित पोषण और टिकाऊ फ़ीड प्रबंधन प्रथाओं के महत्व के बारे में किसानों के बीच जागरूकता पैदा करना है। संगठन किसानों को चारा और चारा प्रबंधन सहित एंड-टू-एंड डेयरी फार्मिंग प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए सलाहकार सेवाएं प्रदान करता है।

सीईडीएसआई किसानों को हाइड्रोपोनिक्स चारा उत्पादन जैसी आधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। हाइड्रोपोनिक्स न्यूनतम भूमि और जल संसाधनों का उपयोग करके अत्यधिक पौष्टिक हरे चारे की खेती की अनुमति देता है। इसमें पोषक तत्वों से भरपूर पानी के घोल का उपयोग करके मिट्टी के बिना चारा फसलें उगाना शामिल है। यह तकनीक पारंपरिक खेती के तरीकों पर निर्भरता को कम करते हुए साल भर ताजा, पौष्टिक चारे की आपूर्ति प्रदान कर सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) में भी चारा और चारा प्रबंधन में सुधार की काफी संभावनाएं हैं। फसल की पैदावार, मौसम के पैटर्न और पशुधन आवश्यकताओं पर डेटा का विश्लेषण करके, एआई और एमएल किसानों को उनकी फ़ीड उत्पादन और प्रबंधन रणनीतियों को अनुकूलित करने में मदद कर सकते हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ फसल चयन, उर्वरक और चारा निर्माण पर वास्तविक समय पर सिफारिशें प्रदान कर सकती हैं, जिससे उत्पादकता और संसाधन उपयोग में वृद्धि हो सकती है।

सीईडीएसआई चारे और चारे की स्थिति से निपटने के लिए क्षेत्र-विशिष्ट दृष्टिकोण पर भी जोर देता है। स्थानीय कृषि अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग से चारे की उन किस्मों की पहचान करने और उन्हें बढ़ावा देने में मदद मिलती है जो विशिष्ट कृषि-जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त हैं। यह दृष्टिकोण किसानों को लचीले और उच्च उपज वाले चारे के विकल्पों तक पहुंच सुनिश्चित करता है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में चारे की उपलब्धता और गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

प्रभाव और आगे का रास्ता:

भारत में चारा और भोजन की स्थिति को संबोधित करने में सीईडीएसआई के प्रयासों से महत्वपूर्ण परिणाम मिले हैं। जागरूकता पैदा करके, सलाहकार सेवाएं प्रदान करके और प्रशिक्षण कार्यक्रम पेश करके, सीईडीएसआई ने किसानों को चारा और चारा प्रबंधन को अनुकूलित करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल के साथ सशक्त बनाया है। परिणामस्वरूप, डेयरी किसानों ने दूध उत्पादन, पशु स्वास्थ्य और समग्र कृषि लाभप्रदता में सुधार देखा है।

इसके प्रभाव को और बढ़ाने के लिए, सीईडीएसआई अपनी सलाहकार सेवाओं में एआई और एमएल प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाना जारी रखेगा। डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि को एकीकृत करके, किसान फ़ीड प्रबंधन के संबंध में सूचित निर्णय ले सकते हैं, जिससे अधिक कुशल संसाधन आवंटन और पशु पोषण में सुधार हो सकता है।

निष्कर्ष:

भारत में चारा और चारे की स्थिति डेयरी उद्योग के लिए एक गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है। हालाँकि, CEDSI जैसे संगठनों की सक्रिय भागीदारी से बेहतर भविष्य की उम्मीद है। जागरूकता सृजन, प्रशिक्षण और सलाहकार सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करके, सीईडीएसआई टिकाऊ और कुशल फ़ीड और चारा प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हाइड्रोपोनिक्स चारा उत्पादन जैसी आधुनिक तकनीकों को अपनाने और एआई और एमएल की शक्ति का उपयोग करने से सीईडीएसआई के प्रयासों को और मजबूती मिलेगी, जिससे भारत में एक लचीला और संपन्न डेयरी क्षेत्र बनेगा।

हम कौन हैं?

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत भारतीय कृषि कौशल परिषद (ASCI) के तत्वावधान में काम करने वाली एक स्वायत्त संस्था "भारत में डेयरी कौशल के लिए उत्कृष्टता केंद्र (CEDSI)", किसानों की आजीविका के सशक्तिकरण और बेहतरी में मदद करने के लिए, वेतनभोगी कर्मचारी, और डेयरी मूल्य श्रृंखला में अन्य हितधारक।

सीईडीएसआई सदस्यता उद्योग के नेताओं, नीति निर्माताओं, विकास चिकित्सकों, डेयरी वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और किसानों को डेयरी उद्योग के लिए आसन्न महत्व के मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करेगी।

CEDSI : रविविंग स्किल्स एंड जनरेटिंग लाइवलीहुड

किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डेयरी किसान / उद्यमी
- डेयरी फार्म पर्यवेक्षक
- डेयरी कार्यकर्ता
- पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- पशु चिकित्सा क्षेत्र सहायक
- पशु चिकित्सा नैदानिक सहायक
- बछड़ा पालन
- कृषि उपकरण तकनीशियन
- डेयरी फार्म अर्थशास्त्र और प्रबंधन
- उद्योग संरेखित प्रमाणन कार्यक्रम (बेरोजगार युवा और छात्र)

एफपीओ उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम

- उत्पाद प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं पर एफपीओ सदस्य अभिविन्यास।
- एफपीओ मार्केट लिंकेज
- एफपीओ शासन
- एफपीओ लेखा

डेयरी कॉरपोरेट्स और सहकारी समितियों के लिए प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चिलिंग प्लांट तकनीशियन
- बल्क मिल्क कूलर ऑपरेटर
- ग्राम स्तरीय दुग्ध संग्रह केन्द्र पर्यवेक्षक
- दूध परीक्षक
- ग्रीन हाउस गैसों का शमन
- दूध की गुणवत्ता आश्वासन
- मिल्क डिलीवरी बॉय
- दूध खरीद और इनपुट पर्यवेक्षक
- डेयरी उद्योग में अपशिष्ट प्रबंधन
- चारा और चारा प्रबंधन
- स्वच्छ दूध उत्पादन
- निर्णय समर्थन प्रणाली / डेटा विश्लेषिकी

सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया